Date -> 16.11.2017 (श्वेत पत्र)

ईश्वर-अर्जुन संवाद का लोकार्पण

परमहंस योगानंद के अध्यात्म का संदेश सभी धर्मों को सम्मान व विश्व बंधु का नजरिया देता है : राष्ट्रपति

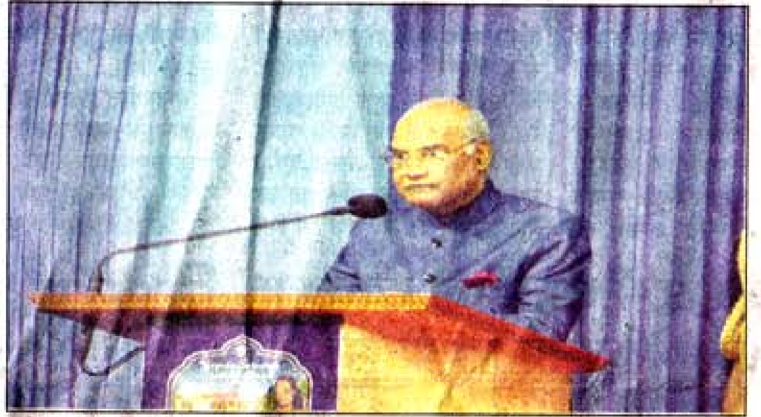

रांची। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि हर व्यक्ति के मन में एक युद्ध चल रहा होता है, इस कुरुक्षेत्र की लड़ाई स्वयं लड़नी है और खुद ही जीतना है, क्या करना है, क्या नहीं करना है और जीतने के लिए विद्वता की नहीं, बल्कि विवेक की जरूरत होती है, यह विवेक केवल और केवल अध्यात्मिकता से ही आती है। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद रांची में योगदा सत्संग आश्रम में योगदा सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित गॉड टू टॉक विद अर्जुन के हिन्दी संस्करण ईश्वर-अर्जुन संवाद के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे।

राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने कहा कि सभी योग की विभिन्न पद्धतियों से परिचित है और गीता का आचरण लोगों को तमाम झंझावात में भी स्थिरता प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि सफलता-असफलता और जय-पराजय सभी में गीता का संदेश महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया गया कि गीता का अंतिम श्लोक व्यक्ति के कौशल विकास और विजय सुनिश्चित करने में समन्वय के रास्ते को बताता है। उन्होंने कहा कि रांची के योगदा सत्संग आश्रम के वातावरण और प्राकृतिक दृश्य में अनूठा मेल दिखता है। यहां आने से पहले उनके मन में आया था कि योगदा सत्संग कोई छोटा से मंदिर होगा, मेडिएशन सेंटर या छोटा से कंपाउंड होगा, लेकिन यहां आने पर उन्हें स्वामीजी ने बताया कि 18-20 एकड़ में यह परिसर फैला है। इस परिसर में जिस वृक्ष के नीचे स्वामी का चित्र लगा है, वह भी अलौकिकता को लेकर करीब 100 वर्ष से खड़ा है। राष्ट्रपति ने देश-विदेश से आये योगदा सत्संग के सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि परमहंस योगानंद द्वारा योग पर लिखित पुस्तक का प्रकाशन समयानुकूल है। उन्होंने बताया कि गीता से संबंधित एक अन्य कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए उन्हें आमंत्रण मिला है, कुरुक्षेत्र को गीता ज्ञान का केंद्र बताया जाता है और वहां 25 से 30 नवंबर तक एक सप्ताह तक अंतरराष्ट्रीय गीता ज्ञान महोत्सव में भाग लेने का अवसर मिल रहा है। उन्होंने बताया कि 1995 में इस पुस्तक का अंग्रेजी, स्पेनिश, इटालियन समेत कई अन्य भाषाओं में प्रकाशन हो चुका है और अब हिन्दी में इसके प्रकाशन से लोगों को जीवनोयोगी ज्ञान मिल सकेगा, इसके लिए वे स्वामी नित्यानंद जी का आभार व्यक्त करते है।

उन्होंने बताया कि 1893 में जिस वर्ष शिकागो में स्वामी विवेकानंद ने अपने उदबोधन से भारतीय आध्यात्म से पश्चिमी सभ्यता को अवगत कराया, इसी वर्ष गोरखपुर में स्वामी परमहंस का जन्म हुआ। 1918 से 1920 तक स्वामी परमहंस ने रांची के इसी योगदा सत्संग आश्रम को अपनी कर्मभूमि बनाया, बाद में 1932 तक उन्होंने अमेरिका में क्रियायोग से लोगों को लाभावित कराया। उन्होंने बताया कि 1935 में वे फिर से भारत लौटे और इसी आश्रम से क्रियायोग का प्रसार किया। 1925 में इस आश्रम में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भी आये थे। श्री कोविंद ने बताया कि परमहंस योगानंद के अध्यात्म का संदेश सभी धर्मों को सम्मान और विश्व बंधु का नजरिया देता है।

एक दिवसीय झारखंड दौरे पर आये राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने योगदा सत्संग द्वारा गरीबों के कल्याण और समाज के अन्य क्षेत्रों में किये जा रहे कार्यों की सराहना की। इस मौके पर राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू, मुख्यमंत्री रघुवर दास और योगदा सत्संग के कई स्वामी, राज्य सरकार के कई मंत्री, सांसद, विधायक और प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।